SJIF 2013 = 1.795
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में आंचलिक समाज का चित्रण

डॉ० निशा वालिया, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

Abstract

हिन्दी कथा साहित्य के श्लाका पुरुष शैलेश मटियानी ऐसे बेजोड़ लेखक हैं जिन्होंने जीवन संघर्षों की उजली आग में अपने साहित्य को तपाया है। मटियानी जी के साहित्य ने मुम्बई से लेकर लखनऊ और अल्मोड़ा (बाड़े छीना) कुमाऊँ तक अपने त्रिविक्रमी पैर पसारे हैं, जिन्होंने दलित-दमित मानवता की कराहटें सुनी और जिसके साहित्य में जनचेतना पूर्ण रूप से मुखरित है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कहानी और उपन्यास महत्वपूर्ण विधा के अन्तर्गत आते हैं। कहानी तथा उपन्यासों में विकसित आंचलिकता एक नवीनतम प्रवृत्ति के रूप में अग्रगण्य है।

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट है उनके पास अनुभवों का भंडार था। साथ ही कथाकार की कल्पनाशीलता ही इनकी कथाओं का कारण बनी। शैलेश जी ने हिमालय की गोद में जन्म लिया था इसीलिए खिलते हुए पुष्प सहृदय लेखक को हँसते हुए दिखाई देते थे नदियाँ गाती हुई, तथा पेड़ों से टकराता शरीर वंशी बजाता सुनायी देता था।

अंततः कह सकते हैं कि शैलेश मटियानी जी एक तेजस्वी प्रतिभावान कथा शिल्पी के रूप में स्वयं को हिन्दी साहित्य में अमर कर गए। इस तरह बहुमुखी प्रतिभा के धनी शैलेश मटियानी का अनुभव संसार काफी व्यापक है।

शोध पत्र

हिन्दी कथा साहित्य के श्लाका पुरुष शैलेश मटियानी ऐसे बेजोड़ लेखक हैं जिन्होंने जीवन संघर्षों की उजली आग में अपने साहित्य को तपाया है। मटियानी जी के साहित्य ने मुम्बई से लेकर लखनऊ और अल्मोड़ा (बाड़े छीना) कुमाऊँ तक अपने त्रिविक्रमी पैर पसारे हैं, जिन्होंने दलित-दमित मानवता की कराहटें सुनी और जिसके साहित्य में जनचेतना पूर्ण रूप से मुखरित है।

शैलेश मटियानी प्रेमचंद, प्रसाद ओर यशपाल की परम्परा के कथाकार और उपन्यासकार हैं। वे कल्पना जीवी नही अपितु सत्यान्वेषी यथार्थ के पक्षधर थे। यही कारण है कि वे हिन्दी कथा साहित्य के मृत्युंजयी लेखक बन पाये हैं।

उनकी नसों में भारतीय सांस्कृतिक लहू की धारा तथा मुखमण्डल और मुट्ठियों में सदैव प्रकम्पकारी जनाक्रोशी तनाव व्याप्त रहता था। लगता था कि वे भूमिगर्भ को फाड़कर उसकी भुरभुरी मिट्टी से अपना सिर ऊपर निकालकर अंतरिक्ष में अपनी छत्राकार छवि धारण करने वाले किसी विशाल वट वृक्ष के बीज है। इसी कारण उनका साहित्यिक अवदान अथाह है। ३० से अधिक कहानी संग्रह, ३१ उपन्यास ३ संस्करण १२ निबन्ध,

९ अपूर्ण अप्रकाशित उपन्यास १५ बाल साहित्य की पुस्तकें लिखने वाले शैलेश जी विकल्प और जनपक्ष के कालजयी संपादक एवं क्रान्ति दर्शी विचारों के उद्गाता साहित्यकार थे। यही कारण है कि शैलेश जी अपने युग के कटु सत्य पर भी बेबाकी राय रखने के पक्षधर थे।

प्रेमचन्द परम्परा के संवाहक लोक धर्मी लेखक शैलेश मटियानी जी का पूरा नाम रमेशचन्द्र सिंह था। १४ अक्टूबर १९३१ को ग्राम बाड़ेछीना जनपद अल्मोड़ा में जन्में मटियानी जी हिन्दी कथा जगत को उत्तराखण्ड की अनुपम देन है। विशुद्ध ग्रामीण परिवेश से शैलेश जी के बालपन की अनछुई कल्पना महानगरीय यायावरी का संधान कर सिद्ध लेखन कला में परिवर्तित हो गयी थी। अपने अभाव ग्रस्त अधूरे शिक्षित जीवन की विषमताएं कभी भी उनकी अदम्य लेखकीय जिजीविषा को पराजति नहीं कर पायी वे बेधड़क मानवीय जीवन संकायों की गहराइयों को खंगालते हुए हमारे सम्मुख समाज के अन्तर्विरोधों के शिकार निम्न वर्गीय वंचितों, शोषितों एव भूखें नंगों का दर्द बड़े मनोयोग से उजागर करते रहे हैं। 'दो दुखों का एक सुख', 'इब्बू मलंग', 'जिबूका', 'महाभोज', 'प्रेत मुक्ति', 'गोपाल गफूरन', अहिंसा और 'पोस्टमैन' सरीखी दर्जनों कहानियाँ उनकी श्रेष्ठ लेखन कला का बेजोड़ नमूना हैं १९४३ से १९९६ तक कुमाऊँ और मुम्बई उनकी सर्जना साहित्य के क्षितिज रहे हैं।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कहानी और उपन्यास महत्वपूर्ण विधा के अन्तर्गत आते हैं। कहानी तथा उपन्यासों में विकसित आंचलिकता एक नवीनतम प्रवृत्ति के रूप में अग्रगण्य है। आंचलिक कथा साहित्य की परम्परा का अभिनव रूप में उत्थान स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हुआ जिसके कारण अनेक उत्कृष्ट कथा साहित्य की रचना हुई। आंचलिक प्रवृत्ति की उद्भावना प्रेमचन्द के पूर्व ही हो चुकी थी, परन्तु इसका समुचित विकास स्वातंत्र्योत्तर युग में ही हुआ। शास्त्रीय दृष्टिकोण से आंचलिकता का समावेश देशकाल अथवा वातावरण उपकरण के अंतर्गत किया जाता है।

स्वातंत्र्योत्तर युगीन आंचलिक कथाकारों में शैलेश मटियानी ने उन पर्वतीय अंचलों को अपने कथा साहित्य का आधार बनाया है जो कि आधुनिक वैज्ञानिक परिवर्तनों से सर्वथा मुक्त है। कूर्मांचल की पर्वतीय स्वाभाविक शोभा और वहाँ के निवासियों की निर्द्वन्द्व मानसिक स्थिति, सुख-दुःख का उद्घाटन करना ही लेखक का मूल ध्येय रहा है।

चिट्ठी रसैन, चौथी मुट्ठी, हौलदार, मुखसरोवर के हंस तथा एक मूठ सरसों आदि उनकी विशिष्ट आंचलिक कृतियाँ मानी जाती है।

हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में जिन प्रवृत्तियों का विकास हुआ है उनमें आंचलिक कथा साहित्यिक प्रवृत्ति का विशेष महत्व है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आंचलिकता के तत्व पूर्व युगीन कथा साहित्य में भी दृष्टिगत होते हैं, परन्तु उसका विशिष्ट स्वरूप स्वातंत्र्योत्तर काल में विकसित हुआ है। सामान्यतः किसी भी नागरिक अथवा ग्रामीण अंचल के जीवन को आधार बनाकर लिखे गए साहित्य को आंचलिक कहा जाता है। इस प्रकार की कृतियों के क्षेत्रीय परिवेश में वहाँ के जनजीवन, आचार-विचार, संस्कृति, भाषा, धर्म और संस्कारों का परिचय दिया जाता है। स्थानीय रंग का समावेश भी ऐसी कृतियों में समुचित रूप में होता है। इस कथा साहित्य की प्रवृत्ति को समृद्ध बनाने में नयी और पुरानी पीढ़ी के बहुसंख्यक साहित्यकारों का योगदान है।

स्वातंत्र्योत्तर आंचलिक जीवन जहाँ एक ओर प्राचीन परम्पराओं और रूढ़ियों से प्रतिबद्ध है वहाँ दूसरी ओर अनेक सुधारवादी आंदोलनों के फलस्वरूप उसमें नवचेतना का अभ्युदय भी हुआ है।

फणीश्वरनाथ रेणू के 'मैला आंचल' उपन्यास जिसे की ग्रामीण जीवन का महाकाव्य कहा जाता है से प्रभावित होकर शैलेश मटियानी ने अपनी कथा यात्रा का श्री गणेश किया। शैलेश मटियानी एक ऐसे कथाकार सिद्ध होते हैं जिन्होंने अपनी कथाओं के माध्यम से जीवन के हर पहलू का स्पर्श किया है। इन्होंने जहाँ ग्राम्य जीवन की अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास, शोषण, छुआछूत जैसे सामाजिक पतन के कारणों को अपनी कथाओं का विषय बनाया वहीं इसके सरल एवं निष्कलुष जीवन पर भी खुलकर लेखनी चलाई। इनकी कथाओं के पात्र जहाँ अभिजात्य वर्ग के लोग हैं, वहीं गरीबी की मार से त्रस्त लोक जीवन का भी इन्होंने संसार से परिचय कराया। इनके समग्र साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात् यही अनुभव होता है कि पार्वत्य भूमि का यह अनूठा रचनाकार जहाँ ग्राम्य जनों के मनोविज्ञान को चित्रित करने में सक्षम हुआ वहीं इसमें लोक जीवन के प्रति सच्ची सहानुभूति है। इस लेखक में एक ओर जहाँ प्रेमचन्द जैसी पैनी दृष्टि है वहीं फणीश्वर नाथ रेणु जैसे आंचलिक उपन्यासकार जैसी आंचलिक संस्कृति को समझने की तीव्र बुद्धि। मटियानी जी में जहाँ जैनेन्द्र की तरह पात्रों के मनोविज्ञान को चित्रित करने की क्षमता है वहीं यशपाल जी की सूक्ष्म चित्रण शैली भी शैलेश के साहित्य में दृष्टिगोचर होती है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में आंचलिक प्रवृत्ति के पोषण में योग देने वाले लेखकों में नयी और पुरानी दोनों ही पीढ़ियों के कथाकार हैं। इस काल में जहाँ एक और फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, देवेन्द्र सत्यार्थी, राजेन्द्र अवस्थी, शैलेश मटियानी आदि का नाम प्रमुख रूप से जाना जाता है। वहीं दूसरी ओर अमृतलाल नागर, रांगेय राघव, उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट आदि समानान्तर लेखकों ने भी आंचलिक कथा साहित्य में विशेष योगदान दिया। वृन्दावनलाल वर्मा, हिमांशु जोशी, रामदरश मिश्र, शिव प्रसाद सिंह, आदि अनेक कथाकारों ने भी विभिन्न आंचलिक कथा साहित्य की रचना में नगरीय एवं ग्रामीण अंचलों का बहुपक्षीय चित्रण किया है।

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट है उनके पास अनुभवों का भंडार था। साथ ही कथाकार की कल्पनाशीलता ही इनकी कथाओं का कारण बनी। शैलेश जी ने हिमालय की गोद में जन्म लिया था इसीलिए खिलते हुए पुष्प सहृदय लेखक को हँसते हुए दिखाई देते थे नदियाँ गाती हुई, तथा पेड़ों से टकराता शरीर वंशी बजाता सुनायी देता था।

शैलेश मटियानी ने कुमाऊँनी संस्कृति की अमूल्य अनुपम धरोहर को अपनी रचनाओं में नए शिल्प कथा के साथ प्रतिष्ठित किया है। ग्रामीण रहन-सहन, रीति-रिवाज, आचार-विचार पर्व, उत्सव एवं त्योहारों की विविधता, लोकनृत्यों, लोकगीतों की विविधता कूर्मांचल में ही देखने को मिलती है। इन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को आंचलिक तत्वों से सम्बन्धित कर विविध जीवन मूल्यों का उद्घाटन किया है। निश्चय ही आगामी पीढी इनकी हमेशा ऋणी रहेगी।

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में अलग-अलग पात्रों के मानसिक स्तरों का अनावरण होता है। साथ ही साथ उनके सामाजिक सम्बन्धों, परम्पराओं एवं जीवन मूल्यों का भी उद्घाटन दिखाई देता है। इनके कथा साहित्य में विषय वस्तु की दृष्टि से कुछ नई राहों का अन्वेषण हुआ है। सामाजिक धरातल पर समकालीन

यथार्थ का जैसा सूक्ष्म चित्रण इनके कथा साहित्य में विद्यमान है। वैयक्तिक सन्दर्भों में भी अन्तर्जगत की वैसी ही सूक्ष्मता दृष्टिकोण होती है। मानव के आतंरिक एवं बाह्य जगत का इतना सूक्ष्म चित्रण प्रशंसनीय है।

कथाकार शैलेश मटियानी की भाषा नदी की जलधारा के सदृश प्रवाहित होती है। न तो उसमें कोई गतिरोध होता है न ही कोई भंवर। जैसी शब्द माला वैसा उसका रूप और प्रभाव। इनकी इसी भाषा के कारण सभी कहानियाँ और उपन्यास लोकप्रिय हुए। इन्होंने इसी भाषा कौशल के माध्यम से लोकजीवन की सुन्दर झांकी प्रस्तुत की है।

मटियानी जी ने अपनी कथाओं में उन सभी गद्य शैलियों को प्रस्तुत किया जो पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होती है। वर्णनात्मक, चित्रात्मक, और भावात्मक शैली इनके कथा साहित्य की सर्वोत्कृष्ट शैली है। सूक्ष्म दृश्य दर्शन इनकी कथा शैली की एक विशेषता है। लोकजीवन की झांकियों को अपनी कथाओं के माध्यम से उभारने के लिए मटियानी जी ने इसी शैली को माध्यम बनाया है।

मटियानी जी की भाषा में आंचलिक शब्दों का प्रयोग स्पष्ट मिलता है। नारी टूटन, स्वतन्त्र मानसिकता, शहरी जीवन निम्न मध्यम वर्ग का संघर्ष आदि उनके कथा साहित्य के मुख्य विषय है। उनके कथा साहित्य की भाषा सरलता सहजता एवं प्रवाहात्मकता लिए हुए हैं। लोकोवितयाँ एवं मुहावरे को भी उनके लेखन में देखा जा सकता है- "अब देखिए चौधरी ब्रजपाल से अपनी हकीकत छिपाना दाईयों से पेट छिपाना है।" भाषा मर्मज्ञ होने से तथ्य और कथ्य को काट छांट व तराशकर प्रयोग में लाने का कौशल भी उनके पास था। उनमें करुणा की गहरी पकड़ थी और मानवीय संवेदनाओं की मार्मिक समझ जैसे कि उनकी कृतियाँ 'बावन नदियों का संगम', 'मुठभेड़ अंहिसा', 'चंद औरतों का शहर', 'चौथी मुट्ठी' आदि में स्पष्ट झलकता है। बम्बई के अनुभवों को उन्होंने उत्कृष्ट कथा साहित्य में रूपान्तरित कर दिया जो उनके भाषा प्रयोग शिल्प और कहानी कला का ही चमत्कार था। उनकी लम्बी कहानी 'उपरान्त' चिंतक, विचारक लेखक लियो तोल्सतोय के उपन्यास 'डैथ ऑफ इवान ईविच' की याद दिलाती है।

सन् १९९४ में मटियानी को कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट् की मानद उपाधि के अलंकृत किया गया था। बी०बी०सी० लंदन से उनकी कहानी 'दो दुखों का एक सुख' का नाट्य रूपान्तरण भी प्रसारित हुआ। साथ ही २० अगस्त सन् २००० ई० को इनका हल्द्वानी में नागरिक अभिनंदन भी किया गया था। २५ अप्रैल २००१ को हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार मटियानी जी का देहावसान हुआ।

शैलेश जी के कथा साहित्य में अद्भुत सघनता और दृश्यात्मक के साथ 'सच' की सच्ची तस्वरी उभरी है। एक ऐसा अद्भुत स्कैच बना है जो उनमें कथा साहित्य से होता हुआ उनके व्यक्तित्व को पकड़ता है। बेहतर समाज के लिए साहित्य सृजन का रास्ता चुनने वाले शैलेश मटियानी का साहित्य अपने काल खण्ड का उत्कृष्ट रचना संसार है। संवेदनशीलता के महारथी मटियानी ने भोगे हुए यथार्थ को जिस शिल्प के साथ अपने रचना संसार में पिरोया वह बेजोड़ है। इसी कारण उनका कथा साहित्य सामाजिकता एवं व्यक्ति को केन्द्र में रखकर रचा गया। मानव संवेदनाओं की महीन कारीगरी उनकी रचनाओं को महान बना देती है। पर्वतीय अंचल को लेकर लिखा गया उनका कथा साहित्य हिन्दी साहित्य में कालजयी बन गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में शैलेश मटियानी के कथा साहित्य के आंचलिक समाज में वर्णित क्रियाकलाप का क्षेत्र-निर्देश किया गया है। इनके कथा साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण तत्व उसका सामाजिक जीवन है।

सामाजिक जीवन जहाँ एक ओर रूढ़िपरक और परंपरानुगामी है, वहीं दूसरी ओर नवचेतना को जागरण के फलस्वरूप उसमें सामाजिक विसंगतियों और विषमताओं से मुक्ति के लिए छटपटाहट भी व्यक्त होती है।

अंततः कह सकते हें कि शैलेश मटियानी जी एक तेजस्वी प्रतिभावान कथा शिल्पी के रूप में स्वयं को हिन्दी साहित्य में अमर कर गए। इस तरह बहुमुखी प्रतिभा के धनी शैलेश मटियानी का अनुभव संसार काफी व्यापक है। ग्रामीण अंचल के जनजीवन से लेकर महानगरों में रहने वाले भिखारियों-अपराधियों के अभिशप्त जीवन तक के दर्शन वहाँ हो जाते हैं। इसी रचना सर्जन के कारण वे शोषितों के 'मसीहा' बन गए हैं। भारतीय समाज एवं संस्कृति के पुरोधा ने हिन्दी जगत में जिस नये युग का सूत्रपात किया है, उसके लिए वे चिरस्मरणीय रहेंगे।

सन्दर्भ सूची

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल
२. समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि, डॉ० धनंजय
३. हिन्दी कहानियों में व्यक्तित्व विश्लेषण, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद वर्मा
४. अतीत तथा अन्य कहानियाँ, शैलेश मटियानी
५. शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ
६. आंचलिक उपन्यास संवेदना और शिल्प, डॉ० ज्ञानचन्द गुप्ता
७. शैलेश मटियानी व्यक्तित्व और कृतित्व, उर्वीश चन्द्र मिश्र
८. शैलेश मटियानी के कहानी साहित्य में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति, डॉ० दीपा गोबाड़ी
९. वृहत् हिन्दी शब्द कोश, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
१०. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ